हम अपने आत्मिक धूसर बालों की संख्या के द्वारा परमेश्वर के
निकट आते हैं

शलोम!
जीवन के वचनों पर इस मनन में आपका स्वागत है। बाइबल हमें आत्मिक परिपक्वता का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत एक ऐसे प्रतीक के द्वारा सिखाती है, जिसे हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं—धूसर (सफेद) बाल।

1. धूसर बाल: आदर और धार्मिकता का प्रतीक

नीतिवचन 16:31 कहता है:

“धूसर बाल शोभायमान मुकुट हैं; वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं।”

शारीरिक जीवन में धूसर बालों को आयु, बुद्धि और सम्मान से जोड़ा जाता है। पवित्रशास्त्र में यह आत्मिक परिपक्वता और उस महिमा का प्रतीक बन जाता है, जो धार्मिक जीवन जीने से प्राप्त होती है। जैसे कोई व्यक्ति अचानक धूसर बालों वाला नहीं हो जाता,

बल्कि समय के साथ वे बढ़ते हैं, वैसे ही आत्मिक विकास भी एक प्रक्रिया है—कोई एक क्षण की घटना नहीं।

दुर्भाग्य से, बहुत से लोग उद्धार को केवल एक बार की घटना समझ लेते हैं। वे मसीह को स्वीकार करते हैं, बपतिस्मा लेते हैं और फिर स्वर्ग जाने की प्रतीक्षा करने लगते हैं। वे आत्मिक वृद्धि को टाल देते हैं और कहते हैं, “मैं बाद में परमेश्वर की सेवा करूँगा,” या “जब मेरे जीवन के लक्ष्य पूरे हो जाएँगे।” ऐसी सोच हमें अनुग्रह में बढ़ने और परमेश्वर के साथ गहरे संबंध में प्रवेश करने के अनमोल अवसरों से वंचित कर देती है।

2. आत्मिक वृद्धि शारीरिक वृद्धि के समान है

शारीरिक जीवन चरणों में बढ़ता है—शैशव, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था। आत्मिक जीवन भी ऐसा ही है। हम आत्मिक शिशु के रूप में आरंभ करते हैं (1 पतरस 2:2), फिर परिपक्वता की ओर बढ़ते हैं (इफिसियों 4:13–15), और हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम पूर्ण आत्मिक प्रौढ़ता की ओर आगे बढ़ें।

1 कुरिन्थियों 13:11 कहता है:

“जब मैं बच्चा था, तब बच्चे की नाईं बोलता था, बच्चे की नाईं

समझता था, और बच्चे की नाईं विचार करता था; पर जब सयाना हुआ,
तो बचपन की बातें छोड़ दीं।”

जैसे हम चिंतित होंगे यदि कोई वयस्क बच्चे जैसा व्यवहार करे, वैसे ही परमेश्वर भी तब प्रसन्न नहीं होता जब हम वर्षों तक आत्मिक रूप से अपरिपक्व बने रहते हैं। आत्मिक वृद्धि वैकल्पिक नहीं है—यह मसीह के साथ जीवित और सजीव संबंध का प्रमाण है।

3. परमेश्वर आत्मिक रूप से परिपक्व लोगों का आदर करता है

पुराने नियम में परमेश्वर वृद्धों का सम्मान करने की आज्ञा देता है—केवल उनकी आयु के कारण नहीं, बल्कि उस बुद्धि और गरिमा के कारण जो समय के साथ विकसित होती है।

लैव्यव्यवस्था 19:32 कहता है:

“धूसरे बालों वाले के सामने खड़ा होना, और वृद्ध पुरुष का
आदर करना, और अपने परमेश्वर का भय मानना; मैं यहोवा हूँ।”

यह सिद्धांत आत्मिक जीवन पर भी लागू होता है। आत्मिक

बुज़ुर्ग—वे जो वर्षों तक विश्वासयोग्य रीति से परमेश्वर के साथ चलते रहे हैं—सम्मान के योग्य हैं। उनके आत्मिक “धूसर बाल” शारीरिक नहीं, बल्कि उनकी विश्वासयोग्यता, धीरज, दीनता और फलदायक जीवन में दिखाई देते हैं।

4. स्वर्ग के 24 प्राचीन: आत्मिक परिपक्वता का चित्र

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हम चौबीस प्राचीनों को देखते हैं जो परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर बैठे हैं। वे सम्मान, परिपक्वता और परमेश्वर की निकटता का प्रतीक हैं।

प्रकाशितवाक्य 4:4 कहता है:

“सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन थे, और उन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहिने बैठे थे, और उनके सिरों
पर सोने के मुकुट थे।”

उनका “प्राचीन” कहलाना बहुत अर्थपूर्ण है। वे बच्चे या युवा नहीं दिखाए गए, क्योंकि वे गहन आत्मिक परिपक्वता का प्रतीक हैं—ऐसे जीवन जो आराधना, धैर्य और पूर्ण समर्पण से भरे हुए हैं।

यहाँ तक कि मसीह को भी उनके महिमामय रूप में वृद्धावस्था और बुद्धि की भाषा में वर्णित किया गया है:

प्रकाशितवाक्य 1:14 कहता है:

“उसका सिर और उसके बाल उजले ऊन और हिम के समान श्वेत थे, और
उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं।”

उनके श्वेत बाल उनकी अनन्त बुद्धि और ईश्वरीय अधिकार को प्रकट करते हैं। यीशु—सनातन—उस आत्मिक परिपक्वता का आदर्श हैं, जिसकी ओर हमें बढ़ना है।

5. आत्मिक धूसर बाल क्यों महत्त्वपूर्ण हैं

कठोर सच्चाई यह है कि सभी विश्वासी आत्मिक रूप से परिपक्व नहीं होते। कुछ लोग दशकों तक आत्मिक बालक बने रहते हैं। वे सभाओं में जाते हैं, संदेश सुनते हैं, पर आज्ञाकारिता, चरित्र और सेवा में नहीं बढ़ते। जब उनसे पूछा जाता है कि उन्होंने परमेश्वर के राज्य के लिए क्या किया, तो उनके पास कुछ नहीं होता—क्योंकि वे कर नहीं सकते थे ऐसा नहीं, बल्कि क्योंकि वे करना नहीं चाहते थे।

उद्धार केवल एक स्थिति नहीं है—यह एक यात्रा है। प्रतिदिन हमारे कार्य, प्रार्थनाएँ, बलिदान और आज्ञाकारिता हमारी अनन्त विरासत को आकार दे रहे हैं।

2 पतरस 1:10–11 कहता है:

“इस कारण, हे भाइयों, अपने बुलाए जाने और चुने जाने को दृढ़
करने का और भी यत्न करो; क्योंकि ऐसा करने से तुम कभी ठोकर न खाओगे। और इस रीति से तुम्हें हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में प्रवेश बहुतायत से मिलेगा।”

अनन्त जीवन का अनुभव सभी का समान नहीं होगा। यद्यपि सब अनुग्रह से उद्धार पाए हैं, फिर भी स्वर्ग में पुरस्कार और उत्तरदायित्व हमारी विश्वासयोग्यता के अनुसार भिन्न होंगे (देखें 1 कुरिन्थियों 3:12–15)।

6. स्वर्ग में हमें हमारे आत्मिक धूसर बालों से पहचाना जाए

यह हमारा संकल्प हो: जब हम अनन्तता में प्रवेश करें, तो हमें आत्मिक शिशु के रूप में नहीं, बल्कि आत्मिक धूसर बालों से सुशोभित जन के रूप में पहचाना जाए—ऐसे लोग जिन्होंने परमेश्वर

के साथ चलना सीखा, विश्वासयोग्य सेवा की, और प्रेम, सत्य और पवित्रता में बढ़ते गए।

अपने सांसारिक जीवन को केवल क्षणिक बातों में न गँवाएँ। अपने आत्मिक जीवन में निवेश करें। आज ही मसीह की सेवा करें। अनुग्रह में बढ़ें। फल लाएँ। क्योंकि स्वर्ग उन्हें पहचानता है जिन्होंने अच्छा जीवन जिया—केवल उन्हें नहीं जिन्होंने विश्वास किया।

फिलिप्पियों 3:12–14 कहता है:

“यह नहीं कि मैं पा चुका हूँ या सिद्ध हो गया हूँ; पर मैं उस लक्ष्य की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि जिस कारण से मसीह
यीशु ने मुझे पकड़ लिया था, उसे मैं भी पकड़ लूँ… मैं उस
लक्ष्य की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, जो परमेश्वर की ओर से मसीह यीशु में ऊपर बुलाए जाने का पुरस्कार है।”

आइए, आज से ही यह लालसा रखें कि हम प्रतिदिन परमेश्वर के और निकट आते जाएँ—ताकि जब हम उसके सामने खड़े हों, तो हमारे जीवन-यात्रा का भार प्रकट हो, न कि बाहरी रूप से, बल्कि हमारी आत्मिक परिपक्वता की महिमा से।

[illegible]

Share on:
WhatsApp